www.anvikshikijournal.com

ISSN 0973-9777
वर्ष - 7 अंक - 1
जनवरी-फरवरी 2013
GISI Impact Factor 0.2310

वर्ष - 7 अंक - 1 जनवरी-फरवरी 2013

भारतीय शोध पत्रिका

# आन्वीक्षिकी

## मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

*समृद्धिमय नव वर्ष –2013*

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.
एम.पी.ए.एस.वी.ओ. एवं आन्वीक्षिकी
सदस्य सहसंयोजन में प्रकाशित

मनीषा प्रकाशन

**आन्वीक्षिकी**

भारतीय शोध पत्रिका

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

**प्रधान सम्पादिका**

डॉ. मनीषा शुक्ला,maneeshashukla76@rediffmail.com

**पुनर्निरीक्षक संपादक**

प्रो. विभा रानी दुबे, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उ.प्र.,भारत

डॉ. नागेन्द्र नारायण मिश्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद,उ.प्र.,भारत

**सम्पादक**

डॉ. महेन्द्र शुक्ल, डॉ. अंशुमाला मिश्रा

**सम्पादक मण्डल**

डॉ. एस. पी. उपाध्याय, डॉ. अनीता सिंह, डॉ. राधा वर्मा, डॉ. प्रभा दीक्षित, डॉ. विशाल अशोक आहेर, डॉ. गीता देवी गुप्ता, ज्योति प्रकाश, डॉ. पद्मिनी रविन्द्रनाथ, डॉ. (श्रीमती) विभा चतुर्वेदी, डॉ. नीलमणि प्रसाद सिंह, डॉ. प्रेम चन्द्र यादव, डॉ. रामनिवास पटेल, डॉ. मुकुल खण्डेलवाल, डॉ. एच. एन. शर्मा, मनोज कुमार सिंह, सरिता वर्मा, उमाशंकर राम, अवनीश शुक्ला, विजयलक्ष्मी, कविता, विनय कुमार पटेल, अर्चना बलवीर, खगेश नाथ गर्ग, मुन्ना लाल गुप्ता

**अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल**

रेव डोडामगोडा सुमनासार (श्रीलंका), वेन केन्डागेले सुमनारांसी थेरो (श्रीलंका), रेव टी धम्मारतना (श्रीलंका), पी.त्रिराची सोडामा (श्रीलंका), फ्रा च्युतिदेश सैन्सोम्बट (बैंकाक,थाईलैंड), फ्रा बूनसर्मस्त्रिथा (थाईलैंड), डॉ. सीताराम बहादुर थापा (नेपाल), मोहम्मद सौरजाई (जाबोल, ईरान), माजिद करीमजादेह (ईराक), डॉ. अहमद रेजा केईखाय फरजानेह (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद जारेई (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद मोजटाबा केयाहफरजानेह (जाहेडान, ईरान), डॉ. होसैन जेनाबदी (सिस्तान एवं बलूचिस्तान, ईरान), मोहम्मद जावेद केयाह फरजानेह (जाबोल, ईरान)

**प्रबन्धक**

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

**सारांश एवं सूचीपत्र**

मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र दिल्ली, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका सूचीपत्र वाराणसी, सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी सूचीपत्र दिल्ली, डी.के.पब्लिकेशन सूचीपत्र दिल्ली, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन एण्ड इन्फारमेशन रिसोर्स सूचीपत्र दिल्ली, नोएडा कॉलेज ऑफ फिज़िकल एजूकेशन सूचीपत्र गौतमबुद्ध नगर

**पाठकों से**

आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका प्रत्येक दो माह (जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, सितम्बर एवं नवम्बर) पर एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण वाराणसी उ.प्र. भारत द्वारा प्रकाशित की जाती है। एक वर्ष में आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका 6 भाग हिन्दी एवं 6 भाग अंग्रेजी एवं 3 अतिरिक्तांकों के भाग में प्रकाशित की जाती है। डॉक खर्च दर के सम्बन्ध में जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

**वार्षिक पाठक मूल्य दर**

संस्थागत : भारतीय 4,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 1200+51/- डाक शुल्क,वैदेशिक : 6000+डॉक खर्च,एक प्रति 1000+डाक शुल्क

व्यक्तिगत : 3,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 500+51 डाक शुल्क सहित,वैदेशिक 5000+डाक शुल्क,एक प्रति 1000+डाक शुल्क

**विज्ञापन एवं निवेदन**

विज्ञापन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रधान सम्पादिका के पते पर संपर्क करें। आन्वीक्षिकी एक स्ववित्तपोषित पत्रिका है, अत: किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग सराहनीय होगा। कृपया अपनी सहयोग राशि चेक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

**सभी पत्राचार निम्नलिखित पते पर ही प्रेषित करें-**

बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया,लंका वाराणसी उ.प्र. भारत,पिन कोड 221005 मोबाइल नं. 09935784387,

टेलीफोन नं. 0542-2310539.,E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com,www.anvikshikijournal.com

मिलने का समय : 3-5 दिन में(रविवार अवकाश)

**पत्रिका संयोजन**

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

**प्रकाशन**

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण

**मनीषा प्रकाशन**

(पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/ 2007-2008 बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया, लंका वाराणसी उ.प्र. भारत)

आन्वीक्षिकी
भारतीय शोध पत्रिका
वर्ष–7 अंक–1 जनवरी–2013

शोध प्रपत्र

धर्म का अर्थ, उपादान, परिभाषा एवं सामान्य धर्म -डॉ. मनीषा शुक्ला 1-3
गीताधर्मो मानवधर्मः -डॉ. गीता देवी गुप्ता 4-7

योग तथा अद्वैतवेदान्तदर्शन में आगमवृत्ति की उपादेयता -उर्वशी श्रीवास्तव 8-11
दिनकर के काव्य में प्रकृति चित्रण -डॉ. मुकुल खण्डेलवाल 12-14

बिहारी की लोकदृष्टि -दिशा पारीक 15-17
दलित साहित्य : अनुभूति का प्रश्न -डॉ. मनीष कुमार जैन 18-22

साहित्य और यथार्थ -जस्सी जोस 23-25
प्राकृतिक संसाधनों के योगक्षेम की वैदिक परम्परा -दिशा पारीक 26-29

हिन्दी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना -डॉ. एच. एन. शर्मा 30-33
कामायनी में प्रकृति-चित्रण -डॉ. मुकुल खण्डेलवाल 34-36

सम्बन्धों के महीन धागों से गुँथी सीताकांत महापात्र की कविताएँ -डॉ. राधा वर्मा 37-42
काव्य सृजन का निहितार्थ प्रयोजन एवं नागार्जुन की काव्यानुभूति -डॉ. वाई. सी. यादव 43-46

बहुजन समाज में राजनीतिक चेतना के नायक मा. कांशीराम जी -डॉ. प्रेम चन्द्र यादव 47-51
बिहार के चुनावों में हिंसा (1952-2004): एक अध्ययन -ब्रजेश कुमार 52-57

नागरिक समाज : एक सैद्धान्तिक विश्लेषण -डॉ. के. डी. सिंह 58-62
लोक कला को प्रभावित करने वाले विविध कारक -मनोज कुमार सिंह 63-66

सूर्योपासना के द्वादश रूप -खगेश नाथ गर्ग 67-71
बिहार में जाति एवं राजनीति (1912-1936): एक अध्ययन -डॉ. मजीद अहमद 72-77

भारतीय समाज में शूद्र एवं दलित वर्ग की आध्यात्मिक चेतना का विकास : एक संक्षिप्त अवलोकन -सुशील कुमार दूबे 78-83
सातवाहन शासकों के सिक्कों का महत्व -मनोज कुमार सिंह 84-86

जैन धर्म में मूर्ति पूजा की समीक्षा -खगेश नाथ गर्ग 87-89
गिजुभाई बधेका के अनुसार शिक्षा के विभिन्न आधारों पर अध्ययन -नवीन कुमार 90-95

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की सांगीतिक यात्रा -सुमिता बनर्जी 96-100
कम्प्यूटर प्रयोगकर्ताओं में फास्ट-फूड के बढ़ते प्रयोग का अवलोकन -डॉ. संजय कुमार गुप्ता 101-105

**শৈবাল মিত্র :কিছু কথা,কিছু স্মৃতি - তন্ময় মন্ডল ১০৬-১১০**
इन्दिरा जी के काल में रायबरेली का औद्योगिक विकास : एक अध्ययन -डॉ. अतुल प्रताप सिंह 111-113

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777
भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2013) **7**,**111-113**
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 10 दिसम्बर 2012

# इन्दिरा जी के काल में रायबरेली का औद्योगिक विकास : एक अध्ययन

डॉ. अतुल प्रताप सिंह*

*लेखक का घोषणा-पत्र*

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित *इन्दिरा जी के काल में रायबरेली का औद्योगिक विकास : एक अध्ययन* शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र का लेखक मैं *अतुल प्रताप सिंह* घोषणा करता हूँ कि लेखक के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेता हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देता हूँ। यह लेख / शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इसे छपने के लिए भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैं शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देता हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देता हूँ।

सामान्य तौर पर औद्योगिक विकास से तात्पर्य समाज में बड़े और मूल भूत उद्योगों के विकास से है ताकि छोटे-मोटे उद्योग उसके कारण स्वतः विकसित हो जायें। एक परिभाषा के अनुसार; औद्योगिक से तात्पर्य बड़े-बड़े उद्योगों के विकास तथा छोटे और कुटीर उद्योग धंधों के स्थान पर बड़े पैमाने की मशीनों की व्यवस्था से है। औद्योगीकरण आर्थिक विकास की व्यापक प्रक्रिया का केवल अंग मात्र होता है; जिसका उद्‌देश्य उत्पादन के साधनों की क्षमता में वृद्धि करके जन जीवन के स्तर को ऊँचा उठाना है।

वास्तव में औद्योगीकरण द्वारा किसी समाज के सामाजिक जन-जीवन को मूल रूप से बदला जाता है; विशेषकर उस समाज में जहाँ की अर्थ व्यवस्था मुख्यतया कृषि पर आधारित होती है। किसी भी समाज के आर्थिक विकास के लिए औद्योगीकरण की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। इसके फलस्वरूप आर्थिक विकास तो होता ही है; साथ में प्रति व्यक्ति आय में भी बढ़ोत्तरी होती है। इसके कारण लोगों को अतिरिक्त रूप से रोजगार की प्राप्ति होती है। सामाजिक जनजीवन का स्तर ऊँचा उठता है। औद्योगीकरण का मुख्य प्रभाव आर्थिक विकास के रूप में परिलक्षित होता है। उत्पादन के उच्चतर स्तर की प्राप्ति औद्योगीकरण के द्वारा ही सम्भव है। औद्योगीकरण तथा आर्थिक विकास में गहरा सम्बन्ध है। इसे इस रूप में प्रकट किया जा सकता है :

1 समाज के उन लोगों को रोजगार प्रदान करना जो इच्छुक होते हुए भी रोजगार में नहीं लगे हैं।
2 उत्पादन में वृद्धि होती है, जिसके फलस्वरूप प्रतिव्यक्ति आय में बढ़ोत्तरी होती है।
3 जन जीवन के रहन-सहन को ऊँचा उठाना।
4 समाज से दरिद्रता गरीबी तथा अंधविश्वास को समाप्त करना।

* प्रवक्ता, इतिहास विभाग, पी. आर. बी. एस. डिग्री कॉलेज रायबरेली (उत्तर प्रदेश) भारत



© लेखक 2012, एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित,सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com & ijraeditor@yahoo.in, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

जनपद रायबरेली का औद्योगिक विकास मूलतः सन् 1972 से आरम्भ हुआ माना जा सकता है। इस वर्ष जनपद के मुख्यालय में सार्वजनिक क्षेत्र का कारखाना 'इंडियन टेलीफोन इन्डस्ट्रीज लिमिटेड' स्थापित की गयी। इस इंडस्ट्री ने जनपद स्तर पर औद्योगिक विकास के लिए अपनी महती भूमिका निभायी। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा के पहल पर इस इंडस्ट्री के स्थापित होने से जनपदवासी बेहद गौरवान्वित हुए।

जनपद के औद्योगिक विकास में जिन प्रमुख उद्योगों की भूमिका महत्वपूर्ण है, वे इस प्रकार हैं :

*(क) इंडियन टेलीफोन इन्डस्ट्रीज लि. रायबरेली :* इंडियन टेलीफोन सार्वजनिक क्षेत्र का वह प्रतिष्ठान है जिसकी शुरूआत बंगलौर में वर्ष 1948 में हुई। आरम्भ में यह भारत सरकार का विभागीय उपक्रम था। सन् 1950 में भारत सरकार ने इसे लि.कं. का स्तर प्रदान किया। इस उपक्रम के 7 विभिन्न स्थानों पर 12 सम्भाग पूरे भारत में फैले हैं। यह स्थान बंगलौर, मनकापुर, गोंडा, नैनी, (इलाहाबाद), पालघाट, श्रीनगर और रायबरेली है। इंडियन टेलीफोन इन्डस्ट्रीज लि. भारत सरकार का एक ऐसा उपक्रम है, जो डाक और तार विभाग, रक्षा विभाग, बिजली बोर्ड, रेलवे, कोयला और खानों के लिए दूर संचार के साधनों और आम नागरिकों के लिए स्वचालित इक्सचेंजों का निर्माण करती है। इसके साथ ही सड़क यातायात सम्बन्धी उपकरण को भी बनाती है। सांस्कृतिक, साहित्यिक और राजनीतिक क्षेत्र में पूर्ण होते हुए रायबरेली जनपद शिक्षा गरीबी, बेरोजगारी आदि में पिछड़ा हुआ रहा है, किन्तु औद्योगिक क्रान्ति के रूप में सन् 1972 ई. में 'इंडियन टेलीफोन इन्डस्ट्रीज लिमिटेड' की स्थापना से प्रत्यक्षतः हजारों लोगों को नौकरी मिली। अप्रत्यक्ष रूप से व्यवसायिक गतिविधियों के कारण नगरीकरण का प्रसार हुआ। जनपद के समूचे औद्योगिक विकास को देखते हुए यदि अकेले आई. टी. आई. पर विचार करें तो हम पाते हैं कि इस संस्थान के द्वारा जनपद का अनेक रूपों में विकास हुआ है। अन्तर्राष्ट्रीय मानकों में इस संस्थान को ISO 9002 का दर्जा मिला हुआ है, जिसके द्वारा इस कारखाने से हुआ उत्पादन और उसकी गुणवत्ता अन्तर्राष्ट्रीय मानकों पर खरी उतरती है। इस संस्थान ने एक और सफलता अर्जित की है कि किसानों के गन्ना बोने की स्वचालित मशीन का भी उत्पादन किया है। ज्ञातव्य है कि इस संस्थान में विकसित टूल रूम और प्लेटिंग शाप एशिया स्तर पर अपने उच्च मानकों तथा अच्छी सुविधाओं के कारण सिरमौर है। इस संस्थान में कार्यरत कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए जो जनपद के ग्रामीण अंचलों से आते हैं उनके लिए फैक्ट्री द्वारा बस सुविधाएं प्राप्त होने से गाँवों के विकास हुए हैं। इस उद्योग के अतिरिक्त इसी क्षेत्र से जुड़े को फेज के नाम से जाना जाता है जहाँ पर पैकबेल इन्डस्ट्रीज, जो सामान पैंकिंग का उत्पादन करती है, स्थित है।

*(ख) फिरोज गांधी ऊँचाहार परियोजना :* फिरोज गांधी ऊँचाहार तापीय परियोजना का शिलान्यास 27 जून 1981 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के कर कमलों से शुरू हुआ। जनपद को औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित करने तथा स्थानीय स्तर पर भारी उद्योगों को निर्बाध रूप से विद्युत आपूर्ति प्रदान करने के लिए इस परियोजना से बेहद लाभ मिला। इस पावर प्लान्ट को वर्ष 1992 में एन. टी. पी. सी. को दे दिया गया। इस पावर प्लान्ट की क्षमता 8000 मेगावाट है। इसके द्वारा प्रत्यक्ष रूप से 3000 से अधिक लोगों को नौकरी मिली है। अन्य व्यवसायिक गतिविधियों से हजारों लोग इससे लाभान्वित हो रहे हैं।

*(ग) एल. एम. एल. वेस्पा लिमिटेड :* इसकी स्थापना रायबरेली जनपद में कार उत्पादन के लिए की गयी थी। वर्तमान समय में यह कार्यशील नहीं है।

*(घ) मोदी कारपेट्स :* जनपद के औद्योगिक विकास में मोदी कारपेट्स की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही है। यहाँ अच्छी क्वालिटी का कारपेट निर्मित होता रहा है।

*(ङ) रावल पेपर मिल :* इस औद्योगिक इकाई में कागज का उत्पादन होता था। फिलहाल यह इकाई बंद है।

*(च) अपकॉम केबिल्स :* ISO 9002 प्रमाण धारक ॲपकाम केबिल्स में केबिल का उत्पादन होता है।

*(छ) यूनिवर्सल स्वीच वेयर लि. :* इस फैक्ट्री में गियर का निर्माण होता है।

*(ज) भवानी पेपर मिल :* इस मिल की स्थापना कई किस्म के कागजों का निर्माण के लिए की गई।

*(झ) स्वदेशी कॉटन मिल :* अमावां रोड पर स्थित इस मिल में कपड़े का उत्पादन किया जाता था।

*(ञ) नन्दगंज सिरोही चीनी मिल, दरियापुर :* चीनी उत्पादन के लिए इसकी स्थापना हुई।

*(ट) नेशनल डेरी उद्योग, सलोन :* भारत सरकार का उपक्रम जिसकी स्थापना बड़े पैमाने पर दूध तथा दूध उत्पादन के लिए की गई।

जनपद में श्रमिक आन्दोलनों की शुरूवात वर्ष 1934 से हुई। रायबरेली जनपद के कोरिहर (सतांव) निवासी सूर्य प्रसाद अवस्थी और हरिहर नाथ शास्त्री ने मिल मजदूर सभा के माध्यम से श्रमिक आंदोलनों को जुझारू आंदोलनों की सीमा तक पहुँचा दिया। इन साहसी युवकों के प्रयासों के परिणामस्वरूप जनपद का मजदूर वर्ग एक राजनीतिक शक्ति बन गया। इस वर्ष मजदूर आंदोलनों में कम्यूनिस्ट का प्रभाव बढ़ा। यह अवस्थी जी की दूरदर्शिता का परिणाम था कि जनपद के सभी श्रमिकों ने इनके नेतृत्व में एकजुटता का भाव प्रदर्शित किए। वर्ष 1934 में जनपद के मिल मजदूरों की तीन महीने की हड़ताल इस एकता का सबसे बड़ा प्रमाण सिद्ध हुई। इस हड़ताल का इतना विकराल रूप था कि उससे भविष्य की आशंकाओं से

भयभीत होकर सरकार ने कम्युनिस्ट वर्चस्व वाली ट्रेड यूनियनों पर प्रतिबंध लगा दिया। अतः वे सब कार्यकर्ता भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस में सम्मिलित हो गए। इसी वर्ष कम लगान, कम मालगुजारी और बेदखली के विरूद्ध संघर्ष करने की दृष्टि से किसान सभाओं की स्थापना की गयी। इस किसान आंदोलन के मुख्य स्वरूप गाँव तहसील और जिला स्तर पर सभाएँ जुलूस और सम्मेलन के आयोजन थे। अधिकांश किसान सभाओं पर कम्युनिस्टों और जनवादी किसानों का प्रभाव था। किसान आंदोलन के जन्मदाता रायबरेली जनपद की ख्याति पूरे देश में थी। यहाँ का किसान जितना जागृत था, उतना कहीं अन्य नहीं देखा गया। जनपद कॉंग्रेस का गढ़ माना जाता था क्योंकि उसका नेतृत्व जवाहर लाल नेहरू और रफी अहमद किदवई सरीखे महान देश भक्तों के हाथ में था। 'रेड मजदूर ट्रेड यूनियनों' पर प्रतिबंध लग जाने से कम्युनिस्ट ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं ने अपना ध्यान किसान संगठन पर केन्द्रित किया। अखिल भारतीय किसान सभा के रूप में उन्हें एक सुसंगठित मंच पहले से ही मिला था। यद्यपि कांग्रेस के मुक्ति आंदोलन में देश का किसान और मजदूर, कांग्रेस के साथ रहा। किन्तु आर्थिक मुद्दों की लड़ाई में उसे कांग्रेस से नेतृत्व प्राप्त नहीं था। कांग्रेस के कतिपय प्रगतिशील क्रांतिकारी और समाजवादी विचारधारा के लोगों ने इस शून्य को भरने की मांग नेतृत्व से की। यह वह समय था जब कांग्रेस के भीतर रूढ़िवादी शक्तियों का प्रभाव कम हो चुका था। वामपंथी शक्तियों के हस्तिकरण और श्रमजीवी जनता के संगठनों में कम्युनिस्टों और क्रान्तिकारी जनवादियों की मजबूत होती जा रही स्थिति ने कांग्रेस नेतृत्व को पार्टी के जनाधार को व्यापक बनाने में सहायता देने वाले कई संरचनात्मक परिवर्तन करने के लिए विवश कर दिया। किसानों और मजदूरों की गिरती हुई आर्थिक दशा को सुधारने का प्रश्न लेकर कांग्रेस के अन्दर वामपंथी तो कांग्रेस के मुक्ति आंदोलन में उलझने खड़ी कर ही रहे थे, कम्युनिस्ट की गतिविधियाँ भी उसे प्रभावित कर रही थी। दोहरी किसान सभाओं के वन जाने से कांग्रेस का आम कार्यकर्ता भी सुविधा की स्थिति में फँस गया था। यह बस निर्विवाद है कि 1969 से लेकर 1977 तक रायबरेली से निर्वाचित प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रयासों से रायबरेली का काया कल्प हुआ। किन्तु राजनीतिक दृष्टि से यहां का वातावरण दूषित होता चला गया। अनेक संगठन और कार्यकर्ता उपेक्षित महसूस करने लगे।

अनेक उद्योगों के अतिरिक्त तमाम तरह के निजी उद्योग जनपद में कार्य कर रहे हैं, जिसमें माचिस, अगरबत्ती, बीड़ी आदि हैं। कृषि के बाद लघु स्तरीय औद्योगिक इकाईयों ने रायबरेली के अर्थ व्यवस्था तथा औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। वर्ष 1984 के अन्त तक जनपद में 6000 से अधिक छोटी बड़ी औद्योगिक इकाईयाँ सक्रिय थीं। अधिकांश सूक्ष्म औद्योगिक इकाईयाँ खादी और ग्रामीण उद्योग विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। इन इकाईयों में 508 इकाईयाँ हथकरघा क्षेत्र में, 102 रासायनिक क्षेत्र में, 702 इकाइयाँ हस्तशिल्प में कार्यशील थी। इन सभी के संचालित होने से रायबरेली का विकास आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक के साथ सांस्कृतिक क्षेत्र में यथेष्ट रूप से सम्भव हुआ है।

## संदर्भ

BAGHEL, AMAR SINGH (1976); *Uttar Pradesh District Gazetteer : Rae Bareli.*

SINGH, LALDEO (1970); *Green Revolution & Cropping Pattern*, Delhi.

मिश्रा, के. के. (1982) -*विकास का समाजशास्त्र,* वैशाली प्रकाशन, गोरखपुर प्रथम संस्करण

*U.N. Report ;* Process and problem of Industrilisation in Under Developed countries,

इन्दु, जवाहर (1997) -*रायबरेली जनपद का औद्योगिक विकास,* प्रेरणा,

गौर, विनोद सिंह (2000) -*रायबरेली बीसवीं सदी,* आचार्य महाबीर प्रसाद द्विवेदी राष्ट्रीय स्मारक (अभियान) समिति, रायबरेली, प्रथम संस्करण

# लेखकों के लिए निर्देश

## शोधपत्र का अनुरोध

लेखक अपना शोधपत्र डॉ. मनीषा शुक्ला ,प्रधान सम्पादिका आन्वीक्षिकी भारतीय शोध पत्रिका को ई-मेल पर प्रेषित करें। (maneeshashukla76@rediffmail.com)

प्राप्त शोधपत्र पत्रिका में प्रकाशन के पूर्व पुनर्निरीक्षित किये जायेंगे। स्वीकृत शोधपत्र कहीं और प्रकाशित नहीं होना चाहिए और न ही उस शोधपत्र का कोई भी भाग प्रधान सम्पादिका के अनुमति के बिना कहीं और प्रकाशित किया जा सकता है। कृपया अपने शोधपत्र की पाण्डुलिपि निम्न भागों में तैयार करें,शीर्षक ;सारांश ;पाण्डुलिपि ;पुस्तक संदर्भ सूची। कृपया पुनर्निरीक्षण की गुणवत्ता में सहायता करने हेतु अपना नाम पता पाण्डुलिपि पर न दें।

**शीर्षक :**शीर्षक पाण्डुलिपि पर अवश्य दें,किन्तु अपना पूरा नाम,पता,संस्था जहाँ पर अध्ययन अथवा अध्यापन कार्य सम्पादित किया गया हो, आपका विषय,दूरभाष अथवा मोबाइल,फैक्स,ई-मेल पत्राचार हेतु अलग पृष्ठ पर अवश्य दें। उपर्युक्त तथ्य आपके शोधपत्र के शब्द सीमा के अन्तर्गत ही माना जायेगा।

**सारांश :**कृपया शोधपत्र का सारांश 120 शब्दों में दें।

**पाण्डुलिपि :**इसके अन्तर्गत मुख्य पाठ्य सामग्री होगी ; जो 5 से 10 पृष्ठ तक होनी चाहिये। शोधपत्र 10 पृष्ठ से (सारांश,शब्द संक्षेप,संदर्भ सूची समेत)अधिक प्रकाशन हेतु स्वीकार नहीं किया जायेगा। अन्यथा वृहद् शोधपत्र(10 पृष्ठ से अधिक) प्रकाशन में देर भी हो सकती है। लेखक को यह बात स्वीकार होनी चाहिए कि शोधपत्र पुनर्निरीक्षण के दौरान किये गये संशोधन उन्हें मान्य होंगे। शोधपत्र प्रकाशन के दौरान त्रुटि की सम्भावना न बने इसका पूरा ध्यान रखा जाता है फिर भी कोई त्रुटि पाये जाने पर लेखक संशोधित रीप्रिंट प्राप्त कर सकता है ; पत्रिका में संशोधन की व्यवस्था नहीं है।

**सन्दर्भ वर्णमालाक्रामानुसार :**शोधपत्र के समापन पर कृपया संदर्भ वर्णमाला क्रमानुसार दें। पत्रिका का वर्ष,लेखक, पृष्ठ संख्या,भाग इत्यादि विस्तार से दें। पुस्तक शीर्षक या पत्रिका शीर्षक इटालिक दें।

**पुस्तक :**प्रकाशक का नाम,संस्करण संख्या,प्रकाशन वर्ष,लेखक का नाम,पुस्तक का नाम,पृष्ठ संख्या

**पत्रिका :**पत्रिका का नाम,लेख का शीर्षक,लेखक का नाम,प्रकाशक का नाम,अंक संख्या/माह,वार्षिक अथवा अर्द्धवार्षिक अथवा मासिक जो भी हो स्पष्ट करें।

**समाचार पत्र :**प्रकाशक,तिथि,सन् ,पृष्ठ संख्या,

**इण्टरनेट :**वेबसाइड,पृष्ठ संख्या,मुख्य शीर्षक,अन्त: शीर्षक।

**मानचित्र एवं सारणी :**मानचित्र एवं सारणी अथवा चित्र शोधपत्र की समाप्ति के अन्त में दें। यह ब्लैक एण्ड व्हाइट ही होना चाहिए। इसका स्पष्ट संकेत पाण्डुलिपि में दें(उदाहरण सारणी संख्या 1)

**विशेष :**कृपया अपना शोधपत्र ई-मेल करने के बाद डॉक से अवश्य भेजें। अपने शोधपत्र के साथ-साथ अपना वायोडाटा, फोटो,स्वपता लिखा लिफाफा(25 रू के टिकट सहित)भेजें। शोधपत्र यदि हिन्दी भाषा में है तो ए.पी.एस प्रियंका रोमन(ए.पी.एस. कार्पोरेट 2000++)में तैयार सी.डी के साथ दें। शोधपत्र प्राप्त होने के एक सप्ताह के अन्दर लेखक को स्वीकृति पत्र प्रेषित कर दिया जायेगा। ई-मेल से प्राप्त शोधपत्र हेतु ई-मेल से स्वीकृति भेजी जायेगी। शोधपत्र प्रेषित करने के पूर्व प्रधान सम्पादिका से दूरभाष पर अवश्य सम्पर्क करें। सम्पादक मण्डल अथवा सलाहकार समिति में सम्मिलित करने का अंतिम निर्णय संस्था का होगा।

सदस्यों से निवेदन है कि वर्ष में 20 सदस्य पत्रिका से जोड़कर संस्था का सहयोग करें।

IJRA

www.onlineijra.com

ISSN 0973-9777

09739777

₹ 1200/-